PROFORMA FOR SYNOPSIS

(Clause 5 of the Ordinance- 45)

1. Title of the thesis	"प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन" **(बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)**
2. Introduction (in about 200 words)	पृष्ठ क्र.1-4
3. A brief review of the work already done in the field	पृष्ठ क्र.5
4. Objectives	पृष्ठ क्र.6
5. Note worthy Contribution in the field of proposed work	पृष्ठ क्र.7
6. Proposal Methodelogy	पृष्ठ क्र.7
7. Expectal Outcome of the proposed work	पृष्ठ क्र.10
8. Bibliography in Standard	पृष्ठ क्र.14
9. List of Published papers of the candidate	-----

17.07.12

निर्देशक
डॉ. हलजिन्दर पाल सिंह सलुजा
प्राध्यापक
शा.वि.या.त.स्व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

Dr. Harjinder Pal Singh Saluja
Professor Deptt. of Commerce
Autonomous
College, Durg (C.G.)

शोधार्थी
योगेन्द्र सिंह
दुर्गा महाविद्यलय
रायपुर (छ.ग.)

सहनिर्देशक
डॉ. एस.एस. खनूजा
प्राचार्य
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

1. *शोध प्रबंध का शीर्षक*

''प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

(बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

2. प्रस्तावना

भारत एक गांवो का देश है, और इसकी आत्मा गांवो में निवास करती है। ये शब्द हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के थे। गांव की प्रकृति से प्रत्येक मानव जाति का संबंध पाया जाता है। एक ग्रामीण समुदाय संघ का वह स्वरूप है, जो एक स्थानीय क्षेत्र में जनता एवं उनकी संस्थाओ के बीच पाया जाता है। जिसमें वे बिखरे हुए खेतों के झोपड़ीयों में एवं एक ग्राम में रहते हैं, जो प्रायः उनकी सामान्य गतिविधियो का केन्द्र होता है। इसी प्रकार ग्रामीण समुदाय वह क्षेत्र है, जहॉ कृषि की प्रधानता प्रकृति से निकटता प्राथमिक संबंधों की बहुलता, कम जनसंख्या, सामाजिक एकरूपता, गतिशीलता का अभाव, दृष्टिकोणों एवं व्यवहार में सामान्य सहमति आदि विशेषताएॅ पायी जाती है। ग्रामीण विकास का अभिप्राय लोगों को होने वाले आर्थिक लाभों के साथ–साथ समाज के संपूर्ण ढांचे में होने वाले अधिकाधिक परिवर्तन में चलाया जाता है। ग्रामीण लोगो के आर्थिक विकास की बेहतर संभावनाए उसी स्थिति में हो सकती है। जब ग्रामीण विकास प्रक्रिया में अधिकाधिक जन सहभागिता सुनिश्चित की जायें। ऋण व निवेश की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था हो साथ ही सामाजिक विकास के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, उर्जा आपूर्ति, स्वच्छ आवास आदि की स्थिति में सुधार और ग्राम जनों की मनोवृत्ति में परिवर्तन भी सामान्य रूप से महत्वपुर्ण है। ग्रामीण विकास एक पद्धिति है। जिसके अंतर्गत सामुहिक प्रयासों से शहरी क्षेत्रो से बाहर रहने वालो के कल्याण तथा आत्म ज्ञान में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है। भारत गांवो का देश है, जिसकी लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो में निवास करती है। भारत सरकार ग्रामीण क्षेत्रो में बहुआयामी तथा निरंतर विकास के लिए पुर्णतः प्रयत्नशील है। ग्रामीण विकास मंत्रालय अनेक योजनाओ के क्रियान्यवयन में लगा हुआ है। जिनका उद्देश्य ग्रामीण जनता को योग्य बनाकर उनके जीवन

स्तर को सुधारना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु केन्द्र सरकार के द्वारा ग्रामीण विकास योजना प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का शुभारंभ किया गया। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एक सत् प्रतिशत केन्द्र प्रायोजित योजना के रूप में क्रियान्यवित है। जो कि हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के कार्यकाल के दौरान 15 अगस्त 2000 को प्रधानमंत्री ने लाल किले में अपने भाषण के दौरान इसकी घोषणा की थी। ग्रामीण सड़को के विकास के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 25 दिसंबर सन् 2000 से यह योजना प्रारंभ कि गई। जिसमें से केन्द्र सरकार की योजना व राज्य सरकार की मदद के द्वारा यह योजना सफलता की ओर अग्रसर हो रही है। स्वतंत्रता के 5 दशको के बाद भी लगभग 40 प्रतिशत भारत के गांव अच्छी तरह बारहमासी सड़को से जुड़े नही हैं। इसके लिए वित्त की व्यवस्था केन्द्रीय सड़क कोष के हाई स्पीड डीजल का 50 प्रतिशत अधिभार, घरेलु वित्तीय संस्थानो से उधार तथा बहुपक्षीय वित्तीय एजेंसियो के माध्यम से किया जाता है। एन.सी.एम.पी. में ग्रामीण सड़कों के अधिकरण को भी शामिल किया गया है। इस तरह प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के संघ को बढा दिया गया है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एक सर्वेक्षण से जानकारी प्राप्त हुई है कि 60 प्रतिशत से अधिक कि बस्तियॉ वर्षा ऋतु के दौरान शहरों से पूर्णतः सम्पर्क टूट जाता है। जिससे कि आवागमन में अत्यधिक परेशानियां होती है। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में मिलने वाली सभी सुविधाओं का लाभ ग्रामीण निवासी नहीं उठा पाते हैं। तत् पश्चात् वह सड़कें जो कि ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों से जोड़ती हैं वह अवरूद्ध हो जाती हैं। और अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं।

इसी अवस्था को देखते हुये केन्द्र सरकार ने सन 2000 में इस योजना का शुभारम्भ किया तथा इस योजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि एक शहरी क्षेत्र के आस पास के सभी असंबद्ध बस्तियों को बारहमासी कनेकटिविटी प्रदान करना है ताकि शहरी सुविधा कि भॉति ग्रामीण वासियों को भी सभी सुविधा उपलब्ध हो सके।

यह योजना मुख्य तीन चरणों में क्रियान्वित की जाती है।

<u>प्रथम चरण</u> :– प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत प्रथम चरण के जिस गाँव कि आबादी 1000 से अधिक हो उस गाँवों को शहरी क्षेत्रों से जोड़ने का कार्य आरम्भ किया गया है, ताकि इस प्रकार के सभी गाँवों को आस–पास के शहरों से बारहमासी कनेक्टिविटी प्रदान किया जा सके।

<u>द्वितीय चरण</u> :– प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में द्वितीय चरण उन गाँवों को दिया गया है जिसकी आबादी 500 से अधिक हो लेकिन 1000 से कम हो इन सभी गाँवों को बारहमासी सड़कों से कनेक्टिविटी प्रदान कि जानी है।

<u>तृतीय चरण</u> :– प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तृतीय व अंतिम चरण में पूरे भारत के उन क्षेत्रों को लिया गया है जो कि पहाड़ी राज्यों जैसे पूर्वोत्तर सिक्किम, हिमाचल प्रदेश जम्मू–कश्मीर, झारखण्ड, उत्तराखण्ड तथा रेगिस्तानी एवं जनजातीय क्षेत्रों में 250 या इससे अधिक आबादी वाले गाँवों को मुख्य सड़क से जोड़ना व बारहमासी कनेक्टिविटी प्रदान करने का लक्ष्य रखा है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना केवल ग्रामीण क्षेत्रों को कवर किया जाएगा शहरी सड़कों को इस कार्यक्रम के दायरे से बाहर रखा गया है। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना केवल ग्रामीण इलाकों में सड़क निर्धारण तक ही सीमित हैं अन्य प्रकार के कार्यक्रम जैसे अन्य जिला सड़कें और ग्राम सड़कों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। तहसील मुख्यालय, ब्लाक मुख्यालय या अन्य मुख्य सड़कों को बस्ती के एक दूसरे के साथ और एक उच्च वर्ग के पास सड़क या बस्ती के समूहों को जोड़ने का रास्ता हो।

इस योजना के अंतर्गत प्रमुख जिला सड़कें, राज्य राजमार्ग और राष्ट्रीय राजमार्ग को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत कवर नही कर सकते हैं भले ही वे ग्रामीण क्षेत्रों में हो यह ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को कनेक्टिविटी के रूप में अच्छी तरह से सड़कों के उन्नयन का काम करता हो वह लागू नही होगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का प्राथमिक ध्यान केंद्रित करने के लिए पात्र असंबंध बस्तियों के लिए सभी मौसम सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करना है । एक सड़क जो किसी ग्रामीण क्षेत्रों का बारहमासी मुख्य सड़कों से कनेक्टिविटी प्रदान नही करता हैं वह यह योजना के अंतर्गत नही आते हैं प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत

किसी भी सड़कों को सीमेंट का उपयोग कर कनेक्टिविटी प्रदान नहीं की जाती है चाहे वह कितनी भी अच्छी हो व कितनी भी कारगर साबित हो इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ने के लिए केवल डामरीकृत सड़कों का ही निर्माण किया जायेगा। और किसी प्रकार कि सड़कों को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत मान्यता नही दी जायेगी।

3. शोध क्षेत्र में पूर्व में किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को अत्यधिक महत्व दिया गया है । इसमें भारत स्तर पर शोध कार्य की समीक्षा की जाए तो इसकी स्थिति बहुत कम है प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना में शोध कार्य लगभग पूर्ण रूप से शासन के द्वारा ही संपन्न किया जाता है। ताकि उन्हें इस बात की जानकारी रहे कि उनके द्वारा जिस योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है वह सफल रूप से संचालित हो रही है या नहीं तथा इसके संचालन में किस–किस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। आदि बातों की जानकारी के लिए भिन्न–भिन्न समय में केन्द्र व राज्य शासन के द्वारा शोध कार्य किए जाते हैं। भारत के अन्य जगहों में कुछ शोध कार्य किए गए हैं जो निम्न है :–

- Rural Road Connectivity Through PMGSY : 2010-2011

  A Study in Karnataka

  B. Jayarama Bhat, Kuvempu University

  Yuvraja. U, Kuvempu University

- PMGSY G.O.I Budjet Briefs 2011-2012

Avani Kapur, Central of Policy Research

Anirvan Choudhry, Centre of Policy Research

इन सभी शोध कार्य के अध्ययन के उपरांत यह जानकारी प्राप्त होती है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में विशेषकर इस योजना में किसी भी प्रकार का शोध कार्य छत्तीसगढ़ एवं बस्तर संभाग में प्रस्तुत नहीं किया गया है। तथा इस योजना से जुड़ी अन्य योजनाओं में शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है।

4. अध्ययन का उद्देश्य

प्रत्येक अध्ययन के मूल में कोई न कोई प्रयोजन निहित होता है। अतः अनुसंधानकर्ता के मन में भी निश्चित रूप से कुछ जिज्ञासा विद्यमान होते हैं, सभी शोध कार्य की आवश्यकता के पीछे जो मूल उद्देश्य रहता है वह ज्ञान की वृद्धि करना, अज्ञात जानकारी प्राप्त करना तथा नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन या पुराने सिद्धान्तों का नई परिस्थितियों में सत्यापन करना होता है। एक शोधकर्ता सामाजिक जीवन एवं सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए केवल सिद्धान्त ही प्रस्तुत नहीं करता बल्कि ऐसे सुझाव भी प्रस्तुत करता है जिनके द्वारा आर्थिक सामाजिक जीवन को अधिक स्वस्थ बनाया जा सके। वास्तविकता यह है कि कोई भी ज्ञान उस समय तक व्यर्थ है जब तक कि उसका व्यावहारिक उपयोग न किया जा सके। शोधपरक आधारों पर अध्ययन हेतु निश्चित उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

- उत्तरदाताओं के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।
- ग्रामीण विकास योजनाओं के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत ग्रामीणों की जागरूकता को ज्ञात करना।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा ग्रामीणों के सामाजिक आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन करना।

- *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा जिन–जिन क्षेत्रों को लाभ मिला है उस क्षेत्रों का अध्ययन करना।*
- *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।*
- *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से रोजगार के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अवसरों को बनाना।*
- *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को कौन–कौन तत्व प्रभावित करते है।*

5. प्रस्तावित कार्य का शोध क्षेत्र में योगदान

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का मुख्य कार्य गॉव की सड़कों को शहर की मुख्य सड़कों से जोड़ना व गॉव में निवासरत मजदूरों को रोजगार मुहैया करना है ताकि उनके जीवन में सुधार लाया जा सके।

प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से प्रधानमंत्री सड़क योजना को वृद्धि के लिए अनके संसाधनों का उपयोग किया गया है। इन समस्त संसाधनों का अध्ययन कर परिणाम ज्ञात करना अन्य विकसित राज्य की तुलना में छत्तीसगढ़ में पक्की सड़कें काफि कम है इस समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में बस्तर संभाग में वर्तमान में चल रही सड़कों से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं की स्थिति तथा भविष्य की योजनाओं एवं विकास की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। बस्तर संभाग नक्सली गतिविधियों में लीन होने के कारण यहॉ पर विकास की गति धीमी है। सड़कों के निर्माण में अत्यन्त परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के सामाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जावेगा। जिसमें सरकार को सकारात्मक कदम उठाकर उस क्षेत्र में आवश्यक सुधार लाने में मद्द मिलेगी।

6. अध्ययन की शोध प्रविधि

किसी भी शोध का प्रमुख लक्ष्य होता है, सत्य की खोज करना। किन्तु यह खोज आसान नहीं होता है इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक पद्धति के अनेक स्तरों से होकर गुजरना पड़ता है इसे शोध के चरण कहते हैं। शोध में एक चरण दूसरे से संबधित होते हैं। शोध के उद्‌देशानुसार संकलित सांख्यिकीय सामाग्री का वर्गीकरण करने के बाद उसे विश्लेषण कर लेखाबद्ध किया जावेगा।

अनुसंधान कार्य दो प्रमुख विधियॉ द्वारा की जा सकती है।

श्शोध विधि के अंतर्गत प्राथमिक समंक को आधार बनाया गया है जिसमें वह संबंधित पक्षकारों के साक्षात्कार प्रश्नावली व अनुसूचि तैयार कर जानकारीयॉ प्राप्त करता है इस विधि में गलती होने की आशंका कम होती है क्योंकि इसमें अनुसंधानकर्ता स्वयं अपने विवेक से सारी गतिविधियों को ध्यान में रखकर कार्य करता है।

श्शोध विधि के अंतर्गत द्वितीय विधि द्वितीयक समंक को आधार बनाया गया है, जिसमें संबंधित विषयो के ग्रंथालयो में उपलब्ध पुस्तकें, पत्र–पत्रिकायें, डायरीयॉ, मासिक पत्रिका, संस्मरण, जिला सांख्यिकी पुस्तक वार्षिक प्रतिवेदन के माध्यम से आकड़ों का संकलन द्वितीय समंको के द्वारा किया गया है। वर्गीकरण एवं सारणीयन विधियों को भी यथा स्थान दिया जावेगा। सारणीयन एवं विशलेषण किया जावेगा। शोध कार्य को पूरा करने के लिए सउद्धेश्य प्रश्नावली का प्रयोग कार्यालय एवं प्रपत्रों का अध्ययन कर एवं आवश्यक आकड़ों को एकत्रित कर रेखाचित्रो एवं सारणीयन का उपयोग किया जावेगा।

शोध का क्षेत्र

श्शोध कार्य के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग को चयनित किया गया है। इस दण्डकारण्य का पठार भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में कुल चार संभाग और 27 जिले है जिसमें से एक बस्तर संभाग है। बस्तर संभाग के अंतर्गत सात जिले आते हैं– कांकेर,

कोण्डागॉव, नारायणपुर, बस्तर, दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा आदि बस्तर संभाग का कुल क्षेत्रफल 39,114 वर्ग किमी. है। जो कि केरल राज्य से बड़ा है और बस्तर का अधिकांश भाग पठारी एवं पहाड़ी है, जिसकी समुद्र तल से औसत ऊॅचाई 600 मीटर और अधिकतम ऊॅचाई 762.50 मीटर है।

शोध परिकल्पना

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व चिंतन, जो अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। किसी अनुसंधान कार्य आरम्भ करने से पूर्व चिंतन व प्रारंभ करने के बाद का चिंतन अर्थात् वह बिन्दु जहॉ से अनुसंधान कर्ता अनुसंधान कार्य प्रारंभ करता है, परिकल्पना कहलाती है। जिस प्रकार ध्रुव तारा रास्ते में भटके हुये राही को दिशा प्रदान करता है, उसी प्रकार परिकल्पना अनुसंधान कर्ता को अनुसंधानकार्य के लिए दिशा निर्देशित करती है। परिकल्पना का सही व स्पष्ट होना आवश्यक है क्योंकि एक सही परिकल्पना अनुसंधान कार्य को निश्कर्ष तक पहुॅचा सकती है।

अध्ययन विषय को दिशा निर्देशन एवं वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिए अध्ययन से संबंधित निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। जिससे अनुसंधान को सही दिशा मिल सके और विषय वस्तु का विश्लेषण पूर्ण रूप से किया जा सके।

1. छत्तीसगढ राज्य के बस्तर संभाग के प्रधानमंत्री ग्रम सडक योजना का क्रियान्यवयन सही ढंग से हो रहा है ।

2. प्रधानमंत्री ग्रम सडक योजना के द्वारा बस्तर संभाग के विकास को गति मिली है ।

3. प्रधानमंत्री ग्रम सडक योजना ग्रमवासियो के आथिक एवं सामाजिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

4. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रौं एवं कस्बो के मजदूरो को रोजगार के अवसर मे वृद्धि हो रही है।

5. *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा वनोपज वितरण व खनिज संसाधनो का परिवहन सुविधाजनक हो रहा है ।*

6. *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत अदिवासियों के आय में वृद्धि होगी एवं श्रम में गतिशीलता बढ़ाने मे सहायक है।*

7. *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी सुविधओं में वृद्धि होगी जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा ।*

7. <u>प्रस्तावित कार्य का प्रत्यशित परिणाम–</u>

देश का संतुलित ग्राम विकास एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। केन्द्र सरकार की मुहीम व राज्य सरकार की मद्द के द्वारा इस योजना को निरंतर सफलता की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

इस शोध कार्य के द्वारा निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगेः–

- *प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की सुनिश्चितता एवं वृद्धि के लिए क्षेत्र आवश्यकता के अनुरूप उपलब्ध संसाधनों के समुचित दोहन एवं विकास में सहायक होंगे।*

- *बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की उपलब्धता से वर्तमान में चल रहे परियोजनाओं की स्थिति तथा भविष्य की योजनाओं एवं विकास की संभावनाओं में वृद्धि होगी।*

- *बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना कि उपलब्धता के साथ–साथ समुचित प्रबंधन के कार्य में भी सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जावेगा। जिसके आधार पर सरकार को सकारात्मक सुझाव में मद्द मिलेगी।*

शोध का प्रारूप / अध्यायीकरण

प्रस्तुत अध्याय को कुल 9 खण्डो में विभाजित किया गया है:–

भूमिका

- *विषय वस्तु का चयन एवं उसकी उपादेयता*
- *शोध का क्षेत्र।*
- *शोध का उद्देश्य।*
- *अध्ययन की परिकल्पना।*
- *शोध प्रविधि।*
- *अध्ययन की सीमाएँ।*

अध्याय – 1

छत्तीसगढ राज्य का सामान्य परिचय

- *छत्तीसगढ राज्य की भौगोलिक स्थिति ।*
- *छत्तीसगढ राज्य की भूमि, जिलों, तहसील एवं विकासखंड का अध्ययन ।*
- *छत्तीसगढ राज्य में जनसंख्या, शिक्षा, रोजगार की स्थिति ।*
- *छत्तीसगढ राज्य में सिंचाई के उपलब्ध साधन का एक परिचय।*

अध्याय – 2

बस्तर संभाग का परिचय–

- *बस्तर संभाग का एतिहासिक परिचय।*
- *बस्तर संभाग की जनसंरचना लिंगानुपात शिक्षा एवं सांस्कृतिक परिवेश।*
- *बस्तर संभाग की ग्रामीण क्षेत्रों का परिचय।*

अध्याय – 3

छत्तीसगढ़ राज्य में परिवहन का विकास–

- प्राचीनकाल में परिवहन का साधन।
- परिवहन साधन में विकास।
- परिवहन के विभिन्न साधन का परिचय।
- सड़क, परिवहन का मुख्य साधन।

अध्याय – 4

छत्तीसगढ़ राज्य की सड़कों का परिचय –

- छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार की सड़को का एक परिचय।
- सड़कों की भौगोलिक स्थिति।
- बस्तर संभाग में सड़कों की स्थिती।
- बस्तर संभाग में सड़को का विकास

अध्याय – 5

छत्तीसगढ़ राज्य में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत निर्माण प्रक्रिया–

- ग्रामीण क्षेत्रों का चयन।
- केन्द्रीय सड़क कोष के द्वारा राशि का आबंटन।
- निर्माण प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के स्तर का परिचय।
- केन्द्र सरकार के द्वारा समय–समय में जॉच एवं निरीक्षण करना।
- निर्माण प्रक्रिया में आने वाली प्रमुख समस्यॉ।

अध्याय – 6

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का अध्ययन–

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की आवश्यकता।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का उद्देश्य ।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का क्रियान्वयन एवं नियोजन ।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के संचालन हेतु संगठनात्मक व्यवस्था एवं विस्तार ।

अध्याय – 7

बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की स्थिति –

- बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा निर्माणधीन सड़के।
- बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में पूर्ण हुई सड़कों की स्थिती।
- प्रश्नावली का निर्माण ।
- बस्तर संभाग में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा लाभ व सुविधा।
- शोध परिकल्पनाओं की पुष्टि ।

अध्याय – 8

छत्तीसगढ़ में सड़को से संबंधित अन्य योजनाओं का परिचय –

- मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना का परिचय।
- विकास कार्य के लिए अन्य क्रियान्वित योजना का योगदान।
- विभिन्न योजनाओं में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का महत्व।
- योजना को क्रियान्वयन करने में आने वाली कठिनाईयॉ।

अध्याय – 9

उपसंहार –

- समस्याएँ।
- सुझाव।
- निष्कर्ष।
- उपसंहार।

नोटः– शोध प्रबंध की प्राप्ति के साथ–साथ नये विषयों का समावेश किया जा सकता है। और आवश्यकतानुसार अध्याय के क्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

8. संदर्भ एवं ग्रंथ सूची

1.	मुखर्जी रविन्द्रनाथ	1983	सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी
2.	जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय	2010	जिला सांख्यिकी पुस्तिका
3.	समसामायिक घटना चक्र प्रकाशन, इलाहाबाद	2011	घटना चक्र
4.	प्रतियोगिता साहित्य साहित्य भवन पब्लिकेशन	2007	छत्तीसगढ़ एक अध्ययन
5.	डॉ. घोष, शंकर सिंग आलम	2007	'यूनिक सामान्य अध्ययन' यूनिक पब्लिकेशन, दिल्ली
6.	सहाय, शिव पूजन	2006	'सांख्यिकी विशलेष' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
7.	त्रिपाठी संजय,	2002	छत्तीसगढ़ वृहत संदर्भ उपकार आगरा प्रकाशन
8.	आर्थिक समीक्षा		भारत सरकार मुद्रालाय प्रकाशन विभाग नई दिल्ली
9.	रूद्र एवं सुन्दरम्	2005	"भारतीय अर्थव्यवस्था" साहित्य भवन पब्लिकेशन, नई दिल्ली

10.	शर्मा के.एस.	1998	'छत्तीसगढ़ का सामाजिक आर्थिक इतिहास' नेशनल पब्लिसिंग हाऊस नई दिल्ली
11.	डॉ. सक्सेना आर.बी.		व्यवसाय प्रकाशन किताब महल आगरा
12.	योजना		सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली छत्तीसगढ़ के संदर्भ में
13.	अग्रवाल, ए.एन	1994	''भारतीय अर्थशास्त्र विकास एवं आयोजन'' विश्व प्रकाशन,
14.	दत्त, रूद्र एवं सुंदरम् के.पी.एम.	1998	''भारतीय अर्थशास्त्र'' एस चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमि. नईदिल्ली
15.	देशमुख, डॉ. नीलिमा	1999	''आर्थिक नीति एंव प्रशासन'' कॉलेज बुक डिपों मुम्बई
16.	गोयल अनुपम	1996	''यूनिफाईड अर्थशास्त्र'' शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी
17.	गुप्ता, डॉ. एस.सी. अग्रवाल, एम.डी.	1999	''भारतीय अर्थशास्त्र'' ईना श्री पब्लिशर्स, जयपुर
18.	कुलश्रेष्ठ डॉ. एवं माथुर	1998	''नियोजन एवं आर्थिक विकास'' साहित्य भवन, आगरा
19.	मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज	2006	''भारत का आर्थिक विकास एंव नियोजन'' साहित्य भवन पब्लिकेंशन
20.	मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, डॉ. जैन एस.सी.	2009	''भारतीय अर्थशास्त्र'' साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
21.	मिश्रा सी.एस. भारद्वाज, जीवन लाल मस्ता, दिनेश कुमार		''यूनिफाईड अर्थशास्त्र'' रामप्रसाद एण्ड सन्स

22.	मिश्र, एस.के.पुरी, वी.के.	1993	''भारतीय अर्थव्यवस्था'' हिमालया पब्लिशकन हाउस
23.	माहेश्वरी डॉ. पी.डी.	2007	''यूनिफाईड अर्थशास्त्र'', कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
24.	माथुर डॉ, वी.एल.	2009	''आर्थिक नीति एवं विकास'' अर्जुन पब्लिकेशन
25.	पंत डॉ. जे.सी.जैन, डॉ. एस.सी. अग्रवाल, डॉ. अनुपम	2006	''अर्थशास्त्र साहित्य भवन पब्लिकेशन''
26.	पियर्सन सामान्य अध्ययन		पियर्सन पब्लिकेशन नई दिल्ली

"प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

(बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

के अंतर्गत वाणिज्य विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रारूप

17.07.12

निर्देशक
डॉ. हरजिन्दर पाल सिंह सलुजा
Dr. Harjinder Pal Singh Saluja
Professor Deptt. of Commerce
Govt. V.Y.T.P.G. Autonomous
College, Durg (C.G.)
शा.वि.या.ता. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी
योगेन्द्र सिंह
दुर्गा महाविद्यलय
रायपुर (छ.ग.)

सहनिर्देशक
डॉ. एस.एस. खनूजा
प्राचार्य
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शोध केन्द्र

PRINCIPAL,
DURGA MAHAVIDYALAYA,
RAIPUR (C.G.)

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)